सूरदास के पद

प्र.१) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

अ) मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?

आ) तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लाँबी-मोटी।

इ) सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

ई) दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़-ढँढोरि आपही आयौ।

उ) ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।

ऊ) सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ।

प्र.२) एक-एक वाक्य में उत्तर लिखें।

अ) सूरदास के पद इस कविता के पहले दोहे में किसका वर्णन किया है?

सूरदास के पद इस कविता के पहले दोहे में कान्हा जी के बचपन की लीला का वर्णन किया है।

आ) माता यशोदा कान्हा को क्या करने के लिए कहती है?

माता यशोदा कान्हा को दूध पिलाने के लिए कहती है।

इ) क्या कहके माँ यशोदा कान्हा को दुध पिलाने के लिए कहती है?

यशोदा माता कहती है की दूध पिने से तुम्हारी चोटी लंबी, मोटी हो जाएगी।

ई) कान्हा को क्या पसंद है?

कान्हा को माखन चोरी पसंद है।

उ) कान्हा अपनी माँ से क्या शिकायत करते है?

कान्हा अपनी माँ से शिकायत करते है कि उन्होंने चोटी का लालच देकर उन्हें कच्चा दूध पिलाया है।

ऊ) अंतिम पंक्ति में कवि सुरदास किस बातकी कामना करते है?

अंतिम पंक्ति में कवि सुरदास कान्हा और बलराम के लंबी उम्र की कामना करते हैं।

ए) गोपिका यशोदा माँ के पास आकर क्या कहती है?

गोपिका यशोदा माँ के पास आकर कहती है के यशोदा काकी तुम्हारे

पुत्र कृष्ण ने हमारा मक्खन चोरी करके खा लिया।

ऐ) कान्हा ने छीके से मक्खन कैसे उतारा?
कान्हा ने ओखली पर चढ़कर छीके से मक्खन उतारा।

ओ) गोपियों के दूध-दही का नुकसान कौन कर रहा है?
गोपियों के दूध-दही का नुकसान कान्हा कर रहा है।

प्र.३) दिए गए पंक्तियों का अर्थ लिखें।
अ) किती बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल वेनी ज्यों, ह्वै है लंबी मोटी।
कितनी बार मुझे तुम दूध पिलाओगी? तुम कहती हो की मेरी चोटी दूध पिनेसे लंबी और मोटी हो जाएगी।

आ) काँचो दूध पियावत पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।
मुझे माखन रोटी पसंद है तो तुम कच्चा दूध पका-पकाकर गरम करके क्यो पिलाती हो? मुझे तुम माखन रोटी क्यों नहीं खिलाती।

इ) दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढि-ढँढोरि आपही आयौ।
दिवस में दोपहर के समय घर में कोई नहीं है ये देखकर तुम्हारे लालने मेरे घरमें आकर ढुंढकर मक्खन खाया है।

ई) उखल चढ़ि सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।।
उखल पर चढ़कर छीके पर का गोरस ले लीया और जब ये उसे अच्छा नहीं लगा तो उसे उसने जमीन पर गिरादीया।

उ) सूरस्याम कौं हटकि न राखै, तैं ही पूत अनोखौ जायौ।।
तुम्हारा पुत्र हमेशा नुकसान ही करता है। तुम अपने श्यामसुन्दर को मना करके घर क्यों नहीं रखती हो। क्या यहाँपे तुम्हार पुत्र ही अनोखा है।

प्र.४) जोड़ीया लगाऐ।

'अ' गट	'ब' गट
अ) किती बार मोहिं दूध पियत भई	हरि-हलधर की जोटी।
आ) सूर चिरजीवौ दोउ भैया,	मनभावत भुइँ में ढरकायौ।
इ) खोलि किवारि, पैठि मंदिर में,	यह अजहूँ है छोटी।
ई) ऊखल चढ़ि, सींके को लीन्हौं,	दूध-दही सब सखनिं खवायौ।

प्र.५) दिए गए शब्दोंके अर्थ लिखो।

अ) मैया - माँ

आ) काँचो - कच्चा

इ) दुपहर - दोपहर

ई) पूत - पुत्र

उ) मोहिं - मेरी

ऊ) भुइँ - जमिन

ए) गोरस - गाय का दूध